विचार बिन्दु

उपदेश देना सरल है, उपाय बताना कठिन है। – टैगोर

क्या किताबें अब मशीनों के लिए हैं?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता बहुत तेज़ी से हमारी ज़िंदगी का हिस्सा बनती जा रही है। कल तक जो लोग इसके नाम से बिदकते थे, वे भी आज इसका उपयोग करने लगे हैं। इसकी क्षमताओं का कल्पनातीत विकास हुआ है और यह क्रम लगातार जारी है। इसी सिलसिले की कुछ घटनाएँ समय-समय पर अख़बारों की सुर्खियाँ बनती हैं और चिंता भी पैदा करती हैं। हाल में एक समाचार आया कि ऑस्ट्रेलिया और यूरोप के पुस्तक विक्रेताओं ने पुस्तकों की असामान्य ख़रीद को लेकर चिंता व्यक्त की है। दूसरी ख़बर यह बाहर आई कि एक एआई कंपनी ऐसी स्कैनिंग सुविधाएँ देने वालों की तलाश में थी जो छह महीनों के भीतर पाँच लाख से बीस लाख तक किताबें स्कैन करके दे सकें। यह संख्या इतनी बड़ी है कि स्वाभाविक प्रश्न उठता है- कोई कंपनी इतनी बड़ी मात्रा में किताबें क्यों खरीद रही है, और क्यों उन्हें स्कैन करवाया जा रहा है।

ये समाचार पढ़ते हुए मुझे बचपन में सुना गया एक प्रसंग याद आया। कहा जाता था कि शाहजहां ने ताजमहल के कारीगरों के हाथ कटवा दिए थे ताकि वे वैसा दूसरा ताजमहल न बना सकें। इतिहासकार इस कथा की पुष्टि नहीं करते, किंतु ज्ञान और सृजन पर एकाधिकार की मानसिकता को समझने के लिए इससे बेहतर प्रतीक शायद ही मिले।

इसी संदर्भ में चर्चा के केंद्र में है अमरीकी कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुसंधान एवं सुरक्षा कंपनीएंथ्रोपिककी एक गुप्त परियोजना-प्रोजेक्ट पनामा। सन 2021 में डारियोअमोदेई और डेनिएलाअमोदेई द्वारा स्थापित यह कंपनी अपने लोकप्रिय एआई सहायककक्लॉडके कारण दुनिया भर में जानी जाती है।क्लॉड आज ओपनएआई के चैटजीपीटी और गूगल के जेमिनी का प्रमुख प्रतिस्पर्धी है। प्रोजेक्ट पनामा की शुरुआत 2024 में हुई और कंपनी ने इसे जानबूझकर गोपनीय रखा। इस परियोजना के अंतर्गत उसने पुस्तक विक्रेताओं से बड़ी संख्या में पुरानी और सेकेंड हैंड किताबें खरीदीं। गूगल बुक्स से जुड़े रहे टॉमटर्वे इस परियोजना के प्रमुख बताए जाते हैं। उद्देश्य था-मानव द्वारा लिखित उच्च गुणवत्ता वाली पुस्तकों का एक विशाल डेटाबेस तैयार करना, जिससे एआई को बेहतर प्रशिक्षण दिया जा सके। एआई को लगातार प्रशिक्षित किया जाता है। उसे जितनी बेहतर सामठी मिलती है, उसके उत्तर उतने ही स्वाभाविक और परिष्कृत होते जाते हैं। लंबे समय से यह शिकायत की जाती रही है कि उसकी भाषा कृत्रिम और किताबी लगती है। संभवत: उसी कमी को दूर करने के लिए यह परियोजना शुरू की गई।

लेकिन इस परियोजना का सबसे विचलित करने वाला पक्ष इसके बाद सामने आता है।

प्रोजेक्ट पनामा के अंतर्गत खरीदी गई पुस्तकों के आवरण हटाए गए, विशेष औद्योगिक कटरों से उनकी जिल्दें काट दी गईं, पन्नों को अलग किया गया और अत्याधुनिक स्कैनरों से प्रत्येक पृष्ठ को डिजिटल रूप में सुरक्षित कर लिया गया। इसके बाद उन पुस्तकों को नष्ट कर दिया गया। कंपनी ने इसे रीसाइक्लिंग कहकर अपनी पर्यावरण-सजगता का प्रमाण बताया। पर्यावरण तो बच गया, लेकिन पुस्तक अपनी जान नहीं बचा पाई। कागज़ पुनर्चक्रित हो गया, किंतु पुस्तक हमेशा के लिए समाप्त हो गई।

यहीं एक मूलभूत प्रश्न सामने आता है। एआई के लिए किताब क्या है?

एआई के लिए किताब ज्ञान का नहीं, डेटा का स्रोत है। उसके लिए प्रेमचंद का उपन्यास और टेलीफोन डायरेक्टरी दोनों समान रूप से डेटा हैं। मनुष्य ऐसा नहीं सोचता। उसके लिए पुस्तक केवल शब्दों का संग्रह नहीं होती। उसमें लेखक का समय, समाज, अनुभव, संवेदना, भाषा, संस्कार और सांस्कृतिक स्मृति भी उपस्थित रहती है। मशीन शब्द ग्रहण करती है; मनुष्य अर्थ और अनुभव ग्रहण करता है। यहीं एक और प्रश्न उठता है। किताबें आख़िर किसके लिए होती हैं-पाठकों के लिए या मशीनों के लिए? और यह यक्ष प्रश्न भी कि एआई के पास इंटरनेट पर उपलब्ध अरबों-खरबों शब्द पहले से मौजूद हैं, तो फिर उसे किताबों की आवश्यकता क्यों पड़ रही है?

दरअसल, इंटरनेट और पुस्तक के बीच एक बुनियादी अंतर है। इंटरनेट तात्कालिक है। वहाँ अधूरी, अपुष्ट और क्षणभंगुर सामठी की भरमार है। इसके विपरीत किसी पुस्तक का प्रकाशित होना एक लंबी बौद्धिक प्रक्रिया का परिणाम होता है। लेखक लिखता है, बार-बार संशोधन करता है, संपादक उसे परखता और सँवारता है, प्रकाशक जोखिम उठाता है, तब कहीं जाकर एक पुस्तक पाठकों तक पहुँचती है। यही कारण है कि सामान्यत: पुस्तकों की भाषा अधिक परिष्कृत, तर्क अधिक सुसंगत और तथ्य अधिक विश्वसनीय होते हैं। शायद इसी कारण एआई कंपनियाँ इंटरनेट से संतुष्ट नहीं हैं; वे पुस्तकों तक पहुँचने के लिए इतनी व्याकुल दिखाई देती हैं। वे भी समझ चुकी हैं कि अच्छी भाषा और गंभीर विचार का सबसे बड़ा स्रोत अब भी पुस्तकें ही हैं।

दरअसल, इंटरनेट और पुस्तक के बीच एक बुनियादी अंतर है। इंटरनेट तात्कालिक है। वहाँ अधूरी, अपुष्ट और क्षणभंगुर सामग्री की भरमार है। इसके विपरीत किसी पुस्तक का प्रकाशित होना एक लंबी बौद्धिक प्रक्रिया का परिणाम होता है। लेखक लिखता है, बार-बार संशोधन करता है, संपादक उसे परखता और सँवारता है, प्रकाशक जोखिम उठाता है, तब कहीं जाकर एक पुस्तक पाठकों तक पहुँचती है।

यहीं से उन आशंकाओं को भी समझा जा सकता है जो लेखकों, प्रकाशकों और पुस्तक संरक्षण से जुड़े संगठनों ने व्यक्त की हैं। कोई व्यक्ति या कंपनी किसी पुस्तक को खरीदकर उसका वैधानिक उपयोग करे, यह उसका अधिकार है। इसलिए केवल किताबें खरीद लेना या उन्हें स्कैन करना अवैध नहीं है। वस्तुत:यह प्रश्न कानून का नहीं, ज्ञान-संस्कृति के भविष्य का भी है।चिंता का पहला कारण यह है कि इस प्रक्रिया में अनेक दुर्लभ अथवा अनुपलब्ध पुस्तकें हमेशा के लिए नष्ट हो सकती हैं। चिंता का दूसरा कारण यह है कि बहुमूल्य साहित्य एआई कंपनियों के निजी डेटाबेस का हिस्सा बन जाएगा, और पाठक की उस तक सीधी पहुँच नहीं होगी।

इसे इस प्रकार समझा जा सकता है। हमारे यहाँ लोकप्रिय ई-पुस्तकालयों की परियोजनाएँ हों या वैश्विक स्तर परप्रोजेक्ट गुटेनबर्ग, दोनों में पुस्तकों का डिजिटलीकरण किया जाता है। अंतर यह है कि वहाँ स्कैन की गई सामग्री इसके बाद भी सार्वजनिक रूप से उपलब्ध रहती है। कॉपीराइट संबंधी मुद्दों को अलग रख दें तो ऐसी परियोजनाएँ ज्ञान के प्रसार का माध्यम बनती हैं। पुस्तकालय-चाहे वे भौतिक हों या डिजिटल-ज्ञान को साझा करते हैं। इसके विपरीत एआई कंपनियाँ उसी ज्ञान को अपने निजी एल्गोरिद्म का हिस्सा बना लेती हैं। पुस्तकालय में पुस्तक पाठक को बेहतर बनाती है; यहाँ वही पुस्तक मशीन को बेहतर बनाती है। विडंबना यह है कि इस प्रक्रिया में पुस्तक स्वयं पाठक की पहुँच से दूर होती चली जाती है। एक तकनीक ज्ञान का लोकतंत्रीकरण करती है, दूसरी उसी ज्ञान को निजी पूँजी में बदल देती है। अंतर बहुत छोटा दिखाई देता है, लेकिन उसके परिणाम अत्यंत दूरगामी हैं।

एक और गंभीर प्रश्न कॉपीराइट का है। प्रोजेक्ट पनामा और इसी प्रकार की अन्य परियोजनाओं के बारे में आरोप है कि वे सामान्यत: लेखकों या प्रकाशकों से अनुमति लेने की ज़हमत नहीं उठातीं। वे थोक के भाव पुस्तकें खरीदती हैं और उन्हें अत्याधुनिक तकनीक से तेज़ी से स्कैन कर लेती हैं। इतना ही नहीं, अनेक मामलों में उन पर पाइरेटेड प्रतियों के उपयोग के आरोप भी लगे हैं, जो न केवल अनुचित बल्कि गैरकानूनी भी हैं। एआई क्षेत्र की कई बड़ी कंपनियाँ आज लेखकों द्वारा दायर मुकदमों का सामना कर रही हैं।एंथ्रोपिक के विरुद्ध भी ऐसा ही एक मुकदमा चल रहा है, जिसमें लेखकों और प्रकाशकों ने लगभग डेढ़ बिलियन डॉलर के हर्जाने की माँग की है। दुनिया भर के लेखक यह नहीं कह रहे कि एआई पुस्तकों का उपयोग न करे। उनकी माँग केवल इतनी है कि यदि उनके लेखन से एआई को प्रशिक्षित किया जा रहा है, तो अनुमति, पारदर्शिता और उचित पारिश्रमिक भी सुनिश्चित किया जाए। प्रश्न तकनीक के विरोध का नहीं, रचनाकार के अधिकार और सम्मान का है।

इतिहास पर दृष्टि डालें तो पुस्तकों का विनाश कोई नई घटना नहीं है। अलेक्ज़ेंड्रिया के पुस्तकालय का विनाश, नालंदा की ज्ञान-संपदा का दहन, चीन में चिन शिहुआंग द्वारा पुस्तकों को जलाया जाना औरनाज़ी जर्मनी में पुस्तक-दहन-ऐसे अनेक उदाहरण इतिहास में मिलते हैं। किंतु उन सबके पीछे तत्कालीन सत्ता की यह इच्छा थी कि ज्ञान पर उसका नियंत्रण बना रहे। आज परिस्थिति भिन्न है, लेकिन आशंका कहीं अधिक सूक्ष्म है। अब पुस्तकों को जलाने की आवश्यकता नहीं है; उन्हें केवल अपने निजी उपयोग के लिए समेट लेना ही पर्याप्त है। पहले पुस्तकालय इसलिए बनाए जाते थे कि अधिक से अधिक लोग पुस्तकों तक पहुँच सकें। अब निजी डेटाबेस इसलिए बनाए जा रहे हैं कि एक मशीन अधिक से अधिक पुस्तकों तक पहुँच सके। इतिहास की यह कितनी बड़ी विडंबना है कि ज्ञान का केंद्र धीरे-धीरे मनुष्य से खिसककर मशीन की ओर जाता दिखाई दे रहा है।

यहीं भविष्य का सबसे गंभीर प्रश्न भी खड़ा होता है। आज एआई को मनुष्य द्वारा लिखी गई पुस्तकें पढ़ाई जा रही हैं। लेकिन दस-बीस वर्ष बाद यदि अधिकांश पुस्तकें स्वयं एआई लिखने लगे तो वह सीखेगा किससे? यदि मनुष्य का मौलिक लेखन कम होता गया और मशीनें अंतत: मशीनों के लिखे हुए से ही स्वयं को प्रशिक्षित करने लगीं, तो भाषा की ताजगी, विचारों की मौलिकता और रचनात्मकता का क्या होगा? क्या तब हम धीरे-धीरे ऐसी दुनिया में प्रवेश नहीं करेंगे जहाँ शब्द तो बहुत होंगे, पर अनुभव कम होते जाएंगे?

विडंबना देखिए कि आज एआई को अधिक मानवीय बनाने के लिए अंतत: मनुष्य द्वारा रचित पुस्तकों की ही शरण लेनी पड़ रही है। यह स्वयं इस बात का प्रमाण है कि सृजन का मूल स्रोत अभी भी मनुष्य ही है, मशीन नहीं।किताबें केवल काग़ज़ के पन्नों का संठाह नहीं होतीं; वे किसी सभ्यता की स्मृति, किसी समाज की चेतना और मनुष्य के अनुभव का संचय होती हैं। यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को अधिक सक्षम और अधिक मानवीय बनाने के लिए हमें उसी मानवीय धरोहर को नष्ट करना पड़े, जिससे वह सीखना चाहती है, तो इसे तकनीकी प्रगति नहीं कहा जा सकता। यह हमारी सांस्कृतिक चेतना के लिए एक गंभीर चेतावनी होगी। प्रश्न एआई का नहीं है; प्रश्न उस नैतिक विवेक का है जिसके साथ हम उसे विकसित करना चाहते हैं। सवाल यह नहीं है कि एआई किताबें क्यों पढ़ रहा है; प्रश्न यह है कि भविष्य में किताबों का स्वामी कौन होगा-मनुष्य या मशीन?

-अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

सुखमय लाइफ मैनेजमेंट के सर्वश्रेष्ठ गुरुदेवों के देव महादेव से जुड़े रोचक रहस्य

डॉ. जे.के. गर्ग

परिवार संतुलन की पारिवारिक सुखों का मूल आधार

'हम दो हमारे दो एवं छोटा परिवार सुखी परिवार' का शाश्वत प्रतीक है शिवजी के दो पुत्र गणेश एवं कार्तिकेय हैं। सुखी और सम्पन्न परिवार वाले मुखिया का सबसे बड़ा गुण यह होना चाहिये कि वह अपने सुख से अधिक अपने परिजनों के सुख की चिन्ता करे और इसके निमित्त खुद की सुख सविधा त्याग करे। मनुष्य के जीवन में तीन मूल जरूरतें रोटी, कपड़ा और मकान ही होते है। भगवान शिव ने इन तीनों ही चीजों की समस्त सुविधाएं अपने परिवार को देकर, स्वयं सात्विक जीवन अपनाया है। उन्होंने परिवार के लोगों के लिए नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों, बहुमूल्य वस्त्रों और भव्य भवनों की व्यवस्था की है। उनका अपना आहार बना आक, धतूरा, बेल पत्र, वस्त्र बना बाघम्बर और निवास स्थान बनी श्मशान भूमि। जिस परिवार में दिन-रात कलह मची हो, ईर्ष्या, द्वेष, वैर, स्पर्धा का बोल बाला हो, वह परिवार नर्क बन जाता है। स्वर्ग वहाँ है जहाँ एकता, प्रेम और शांति हो।

अब देखिये शिव का वाहन बैल, माता उमा का वाहन सिंह, शिव का कंठहार सर्प, श्री गणेश का वाहन मूषक और कार्तिक का वाहन मयूर। सब आपस में एक दूसरे के पुश्तैनी जानी दुशमन है। मगर वाह रे शिव का प्रताप ! सबको प्रेम और एकता के ऐसे धागे में बांध रखा है कि वे आपस में हिलमिल कर रहते हैं। सर्वमान्य और सर्वोच्च निर्णय शांत चित्त ठण्डे दिमाग से ही लिये जा सकते हैं। महादेव के मस्तक पर चंद्रमा और गंगा का होना इस बात का संकेत है कि मस्तिष्क और दिमाग को सदा शीतल रखो। भोले नाथ तामसी प्रवृत्ति का त्याग और अपने अंतर्मन से पूर्ण नीतियों का बहिष्कार करने, दीन हीनों, सेवक दास को प्रेम और आदर प्रदान करने का भी एक अनूठा उदाहरण स्थापित किया। चित्त की एकाग्रता के लिये ध्यान विशुद्ध भारतीय वैज्ञानिक पद्धति है। भगवान शिव का ध्यान मग्न होना यह प्रकट करता है कि उनका अधिकांश समय परिवार एवं जगत के कल्याण के चिंतन करने में बीतता है। परिवार संतुलन की पारिवारिक सुखों का मूल आधार है। नीलकंठ महादेव हम शिव की उपासना भक्ति करते हुए सुखमय स्वस्थ जीवन का आनन्द लेने के लिए उनके गुणों से प्रेरणा लेनी चाहिए और उसी के अनुरूप जीवन जीना चाहिए।

सनातन धर्मी फाल्गुन के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी यानी 11अगस्त 2026 को शिवरात्रि धूमधाम से मनाएंगे। फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को ही शिवरात्रि क्यों मनाई जाती है? धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक ऐसा माना जाता है कि सृष्टि की रचना इसी दिन हुई थी। ईशान संहिता के अनुसार फाल्गुन चतुर्दशी की अद्धरात्रि में भगवान शंकर लिंग के रूप में अवतरित हुए। चतुर्दशी तिथि के महानिशीथ काल में महेश्वर के निराकार ब्रह्म स्वरूप प्रतीक शिवलिंग का अविभार्व होने से भी यह तिथि महाशिवरात्रि के नाम से जानी जाती है। कहा जाता है कि शिवरात्रि के दिन भगवान शिव और आदिशक्ति का विवाह हुआ था। मान्यताओं के अनुसार महाशिवरात्रि के दिन ही समुद्र मंथन के दौरान कालकेतु विषनिकला था। भोले नाथ को सांसारिक होते हुये भी श्मशान का निवासी बोला जाता है इसके पीछे भी लाइफ मैनेजमेंट का महत्वपूर्ण रहस्य छिपा है।

जानिये कैसे? सच्चाई तो यही है कि संसार मोह-माया का प्रतीक है वहीं दूसरी तरफ श्मशान वैराग्य का प्रतीक है। संसार में रहते हुए भी आदमी को किसी से मोह नहीं रखते हुए अपने कर्तव्य पूरे करने के साथ-साथ एक बैरागी की तरह जीना चाहिये। मन के अंदर सवाल उठता है कि शिवलिंग मंदिरों में बाहर क्यों होता है? निसंदेह भोलेनाथ जन साधारण के देवता हैं, इसीलिए भोलेनाथ वहां रहते हैं जहाँ छोटे-बड़े, जवान-बुजुर्ग आसानी से पहुंच सके। इसी मान्यता के कारण शिवलिंग को मन्दिरों में बाहर ही स्थापित किया जाता हैं। इसी वजह से शिवजी अकेले ही वो देव हैं जो गर्भ गृह में भक्तों को दूर से ही दर्शन देते हैं। शिवजी को भोग लगाने और अर्पण करने के लिए कुछ भी नहीं हो तो भक्त उन्हें पत्ता, फूल,याअंजलि भर के भोले नाथ को खुश कर सकता और उनकी पूजा-अर्चना कर सकता है। आईये जाने भोलेनाथ शिवजी की पूजा-अर्चना में बेलपत्र और जल क्यों चढ़ाया जाता है? निसंदेह बेलपत्र भगवान शिव को बेहद प्रिय है और इसलिए शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ाए बिना शिव की पूजा को पूर्ण नहीं माना जाती है।

ध्यान देने योग्य बात है कि कहीं बेलपत्र में तीन पतियों को तीन आदि ध्वनियां जिनकी सम्मिलित गूंज से ऊं बनता है का प्रतीक माना गया है। बेलपत्र की इन तीन पत्तियों को महादेव त्रिनेत्र और भोलेनाथ के हथियार त्रिशूल का भी प्रतीक माना जाता है। भांग-धतूरे को भगवान शिवजी पर क्यों चढ़ाया जाता है? भोले नाथ को आक, धतूरा, भांग आदि शिव को चढ़ाने की जो परिपाटी है, उसके पीछे यही तथ्य छिपा है कि प्रत्येक वस्तु और व्यक्ति के अंदर अच्छे-बुरे दोनों पहलू होते हैं, इन नशीले और विषाक्त पदार्थों को शिव को अर्पित करने का अर्थ हुआ उनके द्वारा शिव-शुभ (औषधीय गुण) को स्वीकार करना किन्तु उनकी अशुभ-व्यसनप्रवर्ती का त्याग कर देना। लाइफ मैनेजमेंट के अनुसार, भगवान शिव को भांग धतूरा चढ़ाने का अर्थ है अपनी बुराइयों को भगवान को समर्पित करना। ऐसा करने से भगवान की कृपा आप पर बनी रहेगी और जीवन सुखमय होगा। आदिकाल से लाइफ मैनेजमेंट के सर्वश्रेष्ठ गुरु भोलेनाथ से जुड़े रोचक रहस्य पार्ट-5

शिवजी केवल मृगछाल ही क्यों धारण करते हैं? निसंदेह समाज में वो ही व्यक्ति वंदनीय होता हैं जो अपरिग्रही हो जिसके जीवन संसार में शांति स्थापित करने के लिए हो। महावीर स्वामी से हजारों साल पहिले भोलेनाथ ने अपरिग्रही बनने का सन्देश देते हुए खुद के शरीर पर मात्र मृगछाल धारण किया क्योंकि केवल मृगछाल धारण करना अपरिग्रह का प्रतीक है। निसंदेह शिव सर्व समाज के सर्वमान्य देवता हैं। शिवरात्रि व्रत मनाने का अधिकार ब्राह्मण से लेकर चंडाल तक सभी को है। भोले बाबा के लिए सब एक समान हैं। भगवान शिव महायोगी भी कहलाते हैं, उन्होंने योग साधना के द्वारा अपने जीवन को पवित्र कियाहै, वे असीमित गुणों के अक्षय भंडार हैं।

देवों के देव महादेव का वाहन नंदी बैल क्यों? जहाँ बैल को खामोश एवं उत्तम चरित्र समर्पण भाव वाला बताया गया है, वहीं दूसरी तरफ बैल बल और शक्ति का भी प्रतीक है। बैल जब क्रोधित होता है तो सिंह से भी भिड़ लेता है। जिस तरह गायों में कामधेनु को श्रेष्ठ माना जाता है उसी प्रकार बैलों में नंदी श्रेष्ठ है। शिवरात्री के पावन पर्व हम सभी सनातन धर्मी भारत वाशी संकल्प लें कि हम समाज के विभिन्न धर्मालंबी लोगों के साथ मिलजुल कर रहेंगे एक-दूसरे का सम्मान करके प्रेम पूर्ण समंध बनायेंगे। समाज के अंदर ऊँच नीच का भेदभाव मिटाने के लिये काम करेंगे। आदिकाल के सर्वश्रेष्ठ मेनेजमेंट गुरु भोलेनाथ अपने परिवार के अंदर निवास करने वाले विपरीत स्वभाव वालों के साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं तो हम विभिन्न धर्मों के अनुयायियों हिदू, मुसलमान, सिख, ईसाई, फ़ारसी, जैन देशवासियों को साथ लेकर क्यों नहीं जीवन व्यापन कर सकते हैं? सही मायने में भगवान शिव की सच्ची पूजा आराधना तभी होगी जब हम उनकी शिक्षाओं को जीवन के अंदर धारण करके मिलजुल कर प्रेमपूर्वक एक परिवारकी भातीं रहगें। ॐनम: शिवाय, ॐ नम: शिवाय,ॐ नम: शिवाय परिवार संतुलन की पारिवारिक सुखों का मूल आधार है। 'हम दो हमारे दो एवं छोटा परिवार सुखी परिवार' का शाश्वत प्रतीक है। शिव जी के दो पुत्र गणेश एवं कार्तिकेय हैं। सुखी और सम्पन्न परिवार के मुखिया का सबसे बड़ा गुण यह होना चाहिये कि वह अपने सुख से अधिक अपने परिजनों के सुख की चिन्ता करे और इसके निमित्त खुद की सुख सविधा का त्याग करे। मनुष्य के जीवन में तीन मूल जरूरते-रोटी, कपड़ा और मकान ही होते है।

'सनातन धर्मी भगवान की साकार और निराकार रूप भक्ति भाव के साथ पूजा-अर्चना, आराधना करते हैं। साकार रूप में शिव जी की देवों के देव महादेव नीलकंठ महादेव, भोले नाथ आदि रूपों में पूजा-अर्चना करते है। शिव जी के मस्तक पर अर्ध चन्द्रमा दर्शाता है कि अर्ध चन्द्रमा धीमे-धीमे अपने आकार मे विस्तार करके पूर्णिमा को विशाल आकार प्राप्त करके समस्त धरती के प्राणियों को शीतलता स्नेह प्रेम का अमृत पान करवाता है। इसीलिए मनुष्य को महादेव के निराकार रूप में पूजा-अर्चना करते हुए जीव निर्जीव पेड़-पौधे मे सदेव उपस्तिथि भगवान शिव को अनुभव करना चाहिए और शिव बन की प्रत्येक वस्तु मे शिव ही उपस्थित है ऐसा मान कर उनकी इस विराट स्वरूप को प्रतिक्षण देखना चाहिए और शिवमय बन जाना चाहिए, ऐसा करने पर हम सभी के अंदर शिव को देखगें और सभी को अपना स्नेह प्यार सम्मान दे कर खुद का और लोगो का जीवन सुखमय मनाने में सफल होंगे। शिव शिव का निरंतर स्मरण करें। हम शिव की उपासना भक्ति करते हुए सुखमय स्वस्थ जीवन का आनन्द लेने के लिए उनके गुणों से प्रेरणा लेनी चाहिए और उसी के अनुरूप जीवन जीना चाहिए। नीलकंठ महादेव की स्तुति उनके मन्त्र ॐ शिवाय नम: ॐ त्रिनेत्राय नम: .ॐ इन्द्रमुखाय नम: ॐ श्री कंठाय नम: से निरंतर करना चाहिए।

-डॉ. जे.के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

हिंदी और राजस्थानी साहित्य में प्रो. कुन्दन माली का साहित्यिक अवदान अतुलनीय

गौरीकांत शर्मा

प्रदेश के समकालीन साहित्यकारों की अग्रिम पंक्ति में गिने जाने वाले उदयपुर के वरिष्ठ कवि, अनुवादक, आलोचक एवं सम्पादक प्रो. कुंदन माली का साहित्यिक अवदान हिंदी एवं राजस्थानी साहित्य की अमूल्य धरोहर है। प्रो. माली को केंद्रीय साहित्य अकादमी का सर्वोच्च राजस्थानी साहित्य पुरस्कार के अतिरिक्त राजस्थान साहित्य अकादमी तथा राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, गुजरात हिंदी अकादमी सहित अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। वे गुजरात विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रोफेसर पद से सेवानिवृत्त हुए, लेकिन हिन्दी और राजस्थानी दोनों भाषाओं में समान अधिकार के साथ उत्कृष्ट लेखन कर उन्होंने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। उन्हे राजस्थानी में आलोचना को स्थापित करने का श्रेय प्राप्त है। साथ ही कविता, अनुवाद और संपादन के क्षेत्र में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने राजस्थानी साहित्य अकादमी की प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका 'मधुमती' के आलोचना विशेषांक के संपादन सहित कुल 14 अंकों के संपादन के साथ ही अनेक संपादकीय दायित्वों का सफल निर्वहन किया है। अंग्रेजी से हिंदी तथा गुजराती से हिंदी में किए गए अनुवादों ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय पहचान दिलाई।

प्रो. माली के बारे में यह चर्चा इसीलिए समीचीन है कि हाल ही में उनके व्यक्तित्व एवं बहुआयामी साहित्यिक अवदान पर केन्द्रित पुस्तक 'निज के भीतर निज से इतर' का लोकार्पण हुआ, जिसमें समय-समय पर देशभर में प्रकाशित आलेखों, टिप्पणियों एवं समालोचनाओं के संकलन के साथ ही अनेक नामचीन साहित्यकारों द्वारा उनके व्यक्तिव व कृतित्व पर लिखे गए लेखों का संग्रह किया गया है। प्रदेश के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सत्यनारायण उनके बारे में कहते हैं कि प्रो. कुन्दन माली का साहित्य मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक सरोकारों और जीवन मूल्यों का सशक्त दस्तावेज है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से साहित्य को समाज से जोड़ते हुए नई वैचारिक दृष्टि प्रदान की है। श्रीनाथद्वारा के वरिष्ठ साहित्यकार माधव नागदा भी कमोबेश यही राय रखते हैं। वे कहते है कि कुंदन माली के आलोचनात्मक लेखन ने साहित्य को नई दिशा और गंभीर वैचारिक आधार प्रदान किया है। माली का रचना संसार आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्त्रोत रहेगा। इसी प्रकार बीकानेर के वरिष्ठ साहित्यकार नीरज दइया के अनुसार प्रो. माली का व्यक्तित्व जितना सहज है, उनका साहित्य उतना ही गहन और व्यापक है। हिंदी एवं राजस्थानी के सशक्त हस्ताक्षर डॉ. माधोसिंह इन्दा कहते हैं कि प्रो. माली का लेखन जीवन, समाज और संस्कृति के गहरे सरोकारों को अभिव्यक्त करता है तथा नई पीढ़ी को गंभीर साहित्य सृजन की प्रेरणा देता है। इसी प्रकार उदयपुर की डॉ. मंजु चतुर्वेदी और बीकानेर के डॉ. मदन गोपाल लड्ढा प्रो. माली के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित पुस्तक निज के भीतर निज के इतर का जिक्र करते हुए इसकी विषयवस्तु को साहित्य जगत की महत्वपूर्ण उपलब्धि बताते हैं।

बकौल पुस्तक के संपादक मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय राजस्थानी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सुरेश सालवी, यह ग्रंथ डॉ. कुन्दन माली के समग्र साहित्यिक अवदान को एक स्थान पर प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास है। प्रो. माली नवोदित साहित्यकारों को आगे लाने में विशेष रूचि रखते हैं। उनके द्वारा प्रेरित कई युवा आज साहित्य के क्षेत्र में अच्छा योगदान कर रहे हैं। प्रो. माली उदयपुर के एक किसान परिवार से आते हैं लेकिन अपने गंभीर एवं स्तरीय लेखन के बल पर साहित्य के क्षितिज पर नक्षत्र की भांति चमक रहे हैं। निज के भीतर निज से इतर पुस्तक उस चमक को और बढ़ाने का कार्य करेगी।

गौरीकांत शर्मा, उप निदेशक,
सूचना एवं जनसंपर्क,
उदयपुर।

वोट आपका, भविष्य गांव-शहर का

आगामी ग्रामीण और शहरी चुनाव में आइए, कसम खाएं। न जाति पर वोट देंगे, न बिरादरी पर। वोट देंगे तो सिर्फ विकास पर। क्योंकि आपका एक वोट, आपके गांव-शहर को भ्रष्टाचार से मुक्ति दिलाकर विकास की नई दिशा दे सकता है। लोकतंत्र का असली पर्व अब नजदीक है। गांव की पंचायत से लेकर शहर की नगरपालिका तक, सरपंच-पंच से लेकर पार्षद-चेयरमैन, एमपीएस, जिला परिषद सदस्य से लेकर प्रधान और जिला प्रमुख तक सभी के चुनाव होने वाले हैं।

लेकिन सवाल ये है-क्या हम फिर वही गलती दोहराएंगे? क्या फिर जात-बिरादरी, भाई-भतीजावाद और पैसे के लालच में वोट देकर 5 साल पछताएंगे? या इस बार ठानेंगे कि "विकास चाहिए, भ्रष्टाचार नहीं"। जैसे जैसे चुनाव नजदीक आएंगे, उम्मीदवार घर-घर दस्तक देंगे। हर कोई बड़े-बड़े सपने दिखाएगा। कोई मोदी के नाम पर वोट मांगेगा। कोई मोदी और भाजपा की बुराई करके स्थानीय मुद्दे गिनाएगा। झूठे वादों और राष्ट्रीय नेताओं के नाम पर आपको अपना कीमती वोट नहीं गंवाना है।

याद रखिए आपके गांव की नाली, सड़क, पानी बिजली और स्कूल का जिम्मा उसी चुने हुए जनप्रतिनिधि का है। डिजिटल इंडिया के दौर में हमें "शिक्षित, ईमानदार और बेदाग छवि" वाले युवा चाहिए जो नए आइडिया से नवाचार कर गांव-शहर को भ्रष्टाचार मुक्त कर विकास की राह पर ले जाएं। ना कि चुनाव जीतकर सफाई बिजली सड़क के टेंडर पाने के लिए अपने सेवा के इमान को भूला कर ठेकेदार बन जाए और कमाई करने में लग जाएं। ध्यान रखें बिना ज्ञान वाला प्रतिनिधि 5 साल सिर्फ कुर्सी तोड़ेगा।

■ अबकी बार चुनें ईमानदार, शिक्षित और बेदाग चेहरा

पंचायत और नगरपालिका लोकतंत्र की सबसे छोटी और सबसे मजबूत इकाई होती है। वोट देने से पहले एक बार जरूर मंथन करें और सोचें अगर जड़ में ही दीमक लग जाएगी तो पेड़ कैसे हरा होगा? चुनाव आते ही जाति के नाम पर, रिश्तेदारी के नाम पर, शराब और पैसों के नाम पर वोट मांगे जाते हैं। और जीतने के बाद वही लोग विकास के पैसों को अपनी जेब और अपने चहेतों तक सीमित कर देते हैं। नतीजा 5 साल तक जनता सिर्फ वादे सुनती रह जाती है।

डिजिटल इंडिया का जमाना है। अब गांव में भी इंटरनेट है, मोबाइल है, जानकारी है। अब जरूरत है ऐसे प्रतिनिधियों की जो:शिक्षित हों ताकि सरकारी योजनाओं को समझकर उसका लाभ जनता तक पहुंचा सकें। युवा हों और नए आइडिया वाले हों जो परंपरागत तरीके से हटकर नवाचार करें। एक युवा सरपंच पूरे गांव को वाई-फाई से जोड़ सकता है। एक ईमानदार पार्षद शहर को कचरा मुक्त बना सकता है। इसलिए अबकी बार वोट देते समय ये 3 बातें याद रखें। चुनाव के दिन बटन दबाने से पहले खुद से ये 3 सवाल पूछें क्या यह व्यक्ति शिक्षित है और समस्या को समझता है। डिग्री नहीं, सोच और समझ देखें। क्या वो गांव-शहर की मूलभूत समस्याओं पर बोलता है? क्या इसकी छवि बेदाग है? क्या इस पर भ्रष्टाचार के आरोप हैं? क्या ये सिर्फ अपने परिवार के लिए काम करेगा या पूरे वार्ड/गांव के लिए? क्या इसके पास विकास का विजन है? सिर्फ वादे नहीं, प्लान पूछें। गांव और शहर का भाग्य 5 साल के लिए आप 1 दिन में तय करते हैं। अगर इस बार भी हमने जाति और भाई-भतीजावाद में वोट दिया, तो अगले 5 साल तक भ्रष्टाचार और अविकास को कोसते रहेंगे। लेकिन अगर इस बार हमने एकजुट होकर योग्य, ईमानदार और शिक्षित युवा को मौका दिया, तो यकीन मानिए- आपका गांव "आदर्श गांव" बन सकता है और आपका शहर "स्मार्ट सिटी"।

आगामी ग्रामीण और शहरी चुनाव में आइए, कसम खाएं। न जाति पर वोट देंगे, न बिरादरी पर। वोट देंगे तो सिर्फ विकास पर। क्योंकि आपका एक वोट, आपके गांव-शहर को भ्रष्टाचार से मुक्ति दिलाकर विकास की नई दिशा दे सकता है।

मुकेश सोनी, वरिष्ठ पत्रकार।

राशिफल